CHAPTER 39

MUSIC

Doctoral Theses

01. कटोच (रंजीत सिंह)
पं. रविशंकर द्वारा निर्मित रागों का वृहद् एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी
Th 25407

विषय सूची

1. पं. रविशंकर जी का संक्षिप्त जीवन परिचय एवं कृतित्त्व के विभिन्न आयाम 2. पं. जी द्वारा निर्मित रागों का अलोकन-भाग एक 3. पं. जी द्वारा निर्मित रागों का अलोकन- भाग दो 4. पं. रविशंकर द्वारा निर्मित रागों का अन्य विशिष्ट संगीतज्ञों द्वारा प्रयोग, विचार एवं उनके साक्षातकार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

02. कलोत्तरा (राकेश)
हिन्दुस्तानी रागदारी संगीत में मिश्रित रागों की अवधारणा : एक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. अनन्य कुमार डे
Th 25417

सरांश
(असत्यापित)

रागों के रूप में भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह अमूल्य निधि सिर्फ गणित के आधार पर ही विकसित नही हुई है, अपितु कई शताब्दियों के परिश्रम एवं अनेक संगीतज्ञों की कल्पना से ही इनकी रचना संभव हुई है। रागों के इतिहास में मिश्र रागों का इतना वर्चस्व रहा है कि राग वर्गीकरण की पुरानी पद्धतियों में एक पद्धति तो ऐसी है, जिसमें शुद्ध और मिश्र रागों का आधार बनाकर वर्गीकरण कर दिया गया है जो शुद्ध, छायालग और संकीर्ण के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राग मिश्रण की प्रक्रिया बड़ी जटिल और वैज्ञानिक है। रासायनिक प्रक्रिया की तरह राग मिश्रण प्रक्रिया भी असीम है , उसके रूप अनन्त है। फिर भी विद्वानों नें मिश्र रागों के उपलव्ध रूपों के आधार पर कुछ नियम खोजने की कोशिश की है जैसे मिश्रण ऐसे ही रागों का किया जाना चाहिए जिनके बीच कोई महत्वपूर्ण समानता हो, उनका चलन मिलता जुलता हो सकता है , या फिर उनके न्यास आदि के स्वर ऐसे हो सकतें है जिनके माध्यम से एक से दुसरे राग में आवागमन सहज और स्वाभाविक बन सके। वर्तमान समय में बहुत से मिश्र राग प्रचलित है इनमें से कुछ तो परम्परा से चले आ रहे हैं और कुछ आधुनिक समय में विभिन्न गुणीजनों एवं कलाकारों द्वारा निर्मित हैं। मिश्र रागों का निर्माण स्वयं ही नही हो जाता अपितु इसके पीछे रचनाकार की संगीत कला में परिपक्वता अभ्यास एवं प्रखर बुद्धि की आवश्यकता होती है जिससे वह नवीन रागों की रचना करनें में समर्थ हो पाता है। अतः मिश्र रागों में विद्धमान सौन्द्रर्यात्मक तत्वों का विश्लेषण कर तथा भिन्न भिन्न संगीतज्ञों

एवं कलाकारों द्वारा मिश्र रागों के रूप में भारतीय शास्त्रीय संगीत को दी गई इस अमूल्य निधि का इस शोधकार्य के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

विषय सूची

1. राग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. मिश्र रागों का ऐतिहासिक विवेचन 3. मिश्र रागों की वर्तमान अवधारणा 4. मिश्र रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. कौर (अमनदीप)
काफी थाट के अंतर्गत रागांग रागों का सौद्धांतिक एवं क्रियात्मक विश्लेषण-सितार वादन के विशेष संदर्भ में।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन
Th 25410

सरांश
(असत्यापित)

शोध प्रबंध के अन्तर्गत, काफी थाट के अंतर्गतरागांग रागों का सैद्धांतिक और क्रीयातमक विश्लेषण - सितार वादन के विशेष संदर्भ में, शोध विषय पर कार्य किया गया है| इस शोध कार्य के अन्तर्गत सर्वप्रथम राग शब्द की व्याख्या को समझाते हुए विभिन्न राग वर्गीकरण पद्धतियों को संक्षिप्त रूप से वर्णित किया गया है| इसके उपरान्त काफी थाट का शास्त्रीय अध्ययन करते हुए उसके पांच रागांगो को विस्त्रित रुप से समझाया गया है एवं इस शोध कार्य मैं काफी थाट के अन्तर्गत आने वाले पांचों रागांगो के रागों की गतो एवं स्वरूपों का संकलन किया गया है|

विषय सूची

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग एवं राग विर्गीकरण 2. काफी थाट के संदर्भ में थाट पद्धति एवं रागांग पद्धति का अध्ययन 3. काफी एवं सारंग अंग के रागों का व्यवहारिक अध्ययन 4. कान्हड़ा एवं धनाश्री अंग के रागों का प्रयोगात्मक अध्ययन 5. मल्हार अंग के रागों एवं कुछ अन्य प्रचलित रागों का क्रियात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. कौर (कमलप्रीत)
बुल्लेशाह की रचनाओं का साहित्यिक एवं सांगीतिक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. अलका नागपाल
Th 25418

विषय सूची

1. बुल्लेशाह का जीवन परिचय 2. बुल्लेशाह की रचनाओं में सूफी सिद्धांत 3. बुल्लेशाह की रचनाएँ 4. बुल्लेशाह की रचनाओं को गाने वाले प्रसिद्ध गायक, कलाकार 5. काफ़ी गायन शैलिया, बुल्लेशाह की प्रसिद्ध काफ़ियों का भावार्थ एवं सांगीतिक विश्लेषण 6. बुल्लेशाह की स्वलिपिबद्ध रचनाएँ। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. कौर (परमजीत)
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रज क्षेत्र में प्रचलित संगीत का सौन्दर्यात्मक विवेचन।
निर्देशिका : डॉ. सुनंदा पाठक
Th 25413

विषय सूची

1. समाज और संस्कृति 2. आध्यात्मिक एवं कलात्मक परिप्रेक्ष्य में ब्रज 3. ब्रज क्षेत्र में प्रचलित संगीत का विधागत स्वरूप 4. ब्रज क्षेत्र में प्रचलित वाद्य एवं नृत्य प्रकार 5. ब्रज के संगीत का सौंदर्यात्मक विश्लेषण 6. ब्रज संगीत की परिवर्तनातमक रूपरेखा। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. डांगी (प्रभात)
राजस्थान की मांगणियार तथा लंगा जनजाति की लोक सांगीतिक परम्परा का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अलका नागपाल
Th 25415

विषय सूची

1. राजस्थान की भौगोलिक एवं वर्तमान क्षेत्र 2. राजस्थान का लोकगीत 3. मांगणियार व लंगा समुदाय का सांगीतिक जीवन 4. मांगणियार व लंगा समुदाय में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्र 5. मांगणियार व लंगा समुदाय के प्रसिद्ध लोक गायक व वादक का साक्षात्कार। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

07. दत्त (रश्मि)
सितार वादन शैली के विकास में 19वीं शताब्दी के प्रमुख कलाकारों का योगदान।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन
Th 25533

सरांश
(असत्यापित)

वादन कला के क्षेत्र में सितार वाद्य के विकास व प्रचार के दृष्टिकोण से 19वीं शताब्दी के कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में सर्वप्रथम सितार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बारे में बताया गया है। इसके अंतर्गत सितार की उत्पत्ति, सितार का पूर्व आकार तथा 19वीं शताब्दी में सितार वाद्य की स्थिति एवं इसके परिवर्तित स्वरूप की चर्चा की गई है। इसके पश्चात 19वीं शताब्दी में प्रचलित सितार वादन शैली एवं बाज के बारे में बताया गया है। इसके अंतर्गत सितार वादन की परंपरा, 19वीं शताब्दी में सितार बाज का स्वरूप तथा सितार की वादन शैली का आधुनिक स्वरूप एवं सितार बाज पर गायन का प्रभाव के विषय में बताया गया है। इसके पश्चात 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के कुछ प्रतिष्ठित सितार वादकों की साधना और उनका योगदान के विषय में चर्चा की गई है। इसके अंतर्गत मियां अमृत सेन जी, उस्ताद बरकत उल्ला खाँ तथा उस्ताद इमदाद खाँ के विषय में विस्तार से बताया गया है। तत्पश्चात 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के कुछ प्रतिष्ठित सितार वादकों की साधना और उनका योगदान के विषय में बताया गया है। जिसके अंतर्गत उस्ताद इनायत खां, उस्ताद वहीद खाँ तथा पंडित रामेश्वर पाठक जी के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। इन सभी कलाकारों की शिष्य परंपरा का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया है। अतः इस शोध प्रबंध में सितार के इतिहास, उत्पत्ति आदि विषय पर पुनः प्रकाश डाला गया। जिससे सितार के अविष्कार के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई तथा 19वीं शताब्दी के सितार बाज का स्वरूप, बाज की विशेषताएं तथा सितार बाज को परिष्कृत करने हेतु 19वीं शताब्दी के प्रमुख कलाकारों का विश्लेषण कर आज की शैलियों पर प्रभाव तथा विकास की चर्चा की गई है।

विषय सूची

1. सितार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. 19वीं शताब्दी में प्रचलित सितार वादन शैली एवं बाज 3. 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कुछ प्रतिष्ठित सितार वादकों की साधना और उनका योगदान 4. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के कुछ प्रतिष्ठित सितार वादकों की साधना और उनका योगदान। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

08. दिवाकर (उदय)
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष में आचार्य नंदन जी का योगदान।
निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी
Th 25412

विषय सूची

1. आयार्च नंदन जी का जीवन परिचय 2. आयार्च नंदन जी द्वारा निर्मित बंदिशों का साहित्यिक एवं सांगीतिक पक्ष 3. गरु के रूप में आयार्च नंदन जी का योगदान 4. आयार्च नंदन जी का शास्त्रीय संगीत के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष में योगदान। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

09. दिशा (मा अमृत)
पंडित उमाशंकर मिश्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : एक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास एवं प्रो. राजीव वर्मा
Th 25535

सरांश
(असत्यापित)

पंडित उमाशंकर मिश्र एक विलक्षण सितार वादक के साथ साथ विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी भी थे पंडित जी की वादन शैली अत्यंत भावपूर्ण, मधुर तथा पूर्णतः मौलिक थी! इस शोध का उद्देश्य पंडित जी की मधुबनी-मैहर घराना मिश्रित एक नवीन वादन शैली को संगीत जगत के सामने लाना तथा संगीत के क्षेत्र में उनके द्वारा दिये गये योगदान पर प्रकाश डालना है। इस शोध प्रबंध को सप्त अध्यायों में विभक्त किया गया है- प्रथम अध्याय के अंतर्गत सितार वाद्य के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ सितार की वादन शैलियाँ एवं विविध घरानों पर संक्षिप्त चर्चा की गई है। तत्पश्चात् मैहर घराने के उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ, पंडित उमाशंकर जी की संक्षिप्त जानकारी दी गई है। द्वितीय अध्याय इसके अंतर्गत पंडित जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, जन्म, बाल्यकाल, प्रारंभिक शिक्षा के साथ-साथ ध्रुपद गायकी व मधुबनी परंपरा का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत पंडित जी की दिल्ली आगमन के पश्चात् शिक्षा-दीक्षा, मुख्य-मुख्य कार्यक्रम, देश-विदेश यात्राएँ, सम्मान एवं पुरस्कारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत पंडित जी की विशिष्ट शैली, मधुबनी-मैहर घराना की वादन तकनीक विस्तार में बतायी गयी है। पंचम अध्याय में पंडित जी की वादन शैली, नवीन व सृजित राग व उनकी बंदिशों की स्वरलिपि तथा साथ ही पारंपरिक रागों का स्वरलिपि सहित प्रस्तुत की गई है। पंडित जी उच्चकोटि के कलाकार के साथ-साथ उच्चकोटि के गुरू भी थे। सप्तम अध्याय के अंतर्गत पंडित जी के शिष्यों के साथ का अनुभव एवं शिक्षण पद्धति का विस्तृत वर्णन किया गया है।

विषय सूची

1. सितार वाद्य का संक्षिप्त परिचय एवं आधुनिक स्वरूप 2. पं. उमाशंकर मिश्र का जीवन परिचय एवं पारिवारिक सांगीतिक परम्परा 3. पं. उमाशंकर मिश्र कलाकार व गुरू के रूप में 4. पं. उमाशंकर मिश्र के सितार वादन की विशिष्ट शैली 5. पं. उमाशंकर मिश्र द्वारा बनाई गई बंदिशों की स्वरलिपि 6. पं. उमाशंकर मिश्र पर समकालीन संगीतकारों के विचार 7. पं. उमाशंकर मिश्र के शिष्य एवं उनके पंडित जी के प्रति उद्गार। उपसंहार। चित्र वीथि।संदर्भ ग्रंथ सूची।

10. पाठक (नेहा)
हिन्दुस्तानी संगीत में राग निर्मिति में प्रयुक्त होने वाले सौंदर्यात्मक तत्वों की भूमिका : एक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सुनंदा पाठक एवं प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
Th 25411

विषय सूची

1. हिन्दुस्तानी संगीत में राग की परम्परा एवं विकास, मतंग से आधुनिक काल तक 2. भारतीय चिंतन में सौंदर्य की अवधारणा एवं राग में निहित सौंदर्यात्मक तत्व 3. राग प्रस्तुति में निर्मित सौंदर्यात्मक तत्वों की भूमिका 4. ख्याल गेय विधा एवं इसेम प्रयुक्त बंदिशों का महत्व 5. विभिन्न घरानों के कलाकारों द्वारा राग निर्माण में प्रयुक्त सौंदर्यात्मक तत्वों के संबंध में विचार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. पूजा
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राजस्थान के लोक संगीत की लोकप्रियता : एक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. अलका नागपाल
Th 25605

सरांश
(असत्यापित)

शोध प्रबंध के अंतर्गत राजस्थान की लोकप्रियता वर्तमान में किस तरह हुई इसका विस्तार से वर्णन देते हुए सर्वप्रथम प्रथम अध्याय में राजस्थान के इतिहास को बताया गया है जिनमें 'लोक' शब्द का अर्थ एवं उसकी उत्पत्ति को बताया है राजस्थान का ऐतिहासिक परिचय व वर्तमान में लोक सांस्कृतिक स्थिति को बताया गया है| इसके पश्चात द्वितीय अध्याय में राजस्थान के लोक संगीत का वर्णन किया है जिसमें जन्म संस्कार, ऋतुओं, त्योहारों, देवी देवताओं तथा कुछ प्रचलित लोकगीत जैसे घूमर, गोरबंद, मूमल आदि का वर्णन किया है| इसके पश्चात तृतीय अध्याय में राजस्थानी लोक वाद्यों तत, अवनद्ध, सुषिर एवं घन वाद्यों के बारे में बताया गया है| तत्पश्चात चतुर्थ अध्याय में राजस्थान के लोकगीतो का अन्य संगीतिक शैलियों - शास्त्रीय व फिल्मी संगीत के साथ अंतर्संबंध को बताया है जिसके अंतर्गत किस तरह शास्त्रीय संगीत में राजस्थानी लोक गीतों को लिया गया है तथा किस तरह लोकगीतों में शास्त्रीय झलक दिखाई जाती है| इसी तरह फिल्मो में लोकगीतों का प्रयोग किस तरह होता है उसको विस्तार से बताया गया है| इसके पश्चात पंचम अध्याय के अंतर्गत राजस्थान की लोकप्रियता फ्यूज़न व फिल्म संगीत से तथा देश- विदेश में लोकप्रियता किस तरह हुई उन सबका विस्तार से वर्णन किया गया है तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व विभिन्न एकेडमी का जो विशेष महत्व इन लोकगीतो को आगे बढ़ाने में रहा है इन सभी का वर्णन किया गया है|

विषय सूची

1. राजस्थान के लोक संगीत का इतिहास 2. राजस्थान का लोकसंगीत 3. राजस्थान के लोकगीतों में प्रयुक्त वाद्यों का वर्गीकरण 4. राजस्थान के लोक संगीत का अन्य सांगीतिक शैलियों से अंतर्सबंध 5. वर्तमान में राजस्थानी लोक संगीत की लोकप्रियता। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

12. बंसल (नेहा)
हरियाणा राज्य में विद्यालयीन शिक्षा में शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. राजीव वर्मा
Th 25604

विषय सूची

1. हरियाणा राज्य की पृष्ठभूमि/परिचय 2. विद्यालयीन स्तर पर शास्त्रीय संगीत शिक्षा 3. हरियाणा राज्य के विद्यालयों में शास्त्रीय संगीत का स्वरूप 4. हरियाणा राज्य में विद्यालयीन शिक्षा में शास्त्रीय संगीत की वर्तमान स्थिति 5. विद्यालयीन स्तर पर शास्त्रीय संगीत शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

13. भावना
सुगम संगीत में सहायक वाद्यों का महत्व : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. राजपाल सिंह
Th 25606

विषय सूची

1. सुगम संगीत 2. सुगम संगीत की गेय विधाएँ (गीत, भजन, ग़ज़ल) 3. सुगम संगीत की गेय विधाओं में सहायक वाद्यों की भूमिका 4. सुगम संगीत में प्रयुक्त होने वाले पाश्चात्य एवं इलैक्ट्रोनिक वाद्यों की भूमिका। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

14. मधुलता
उस्ताद अमीर खाँ साहब की गायन शैली का बंदिशों के माध्यम से सौन्दर्यात्मक विवेचन : एक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सुदीप्ता शर्मा
Th 25419

सरांश
(असत्यापित)

खाँ साहब द्वारा गायी गई बंदिशों में उनके साहित्य की गहराई, सूफ़ीयाना अंदाज एवं मस्ती में झूलने वाली भावनाएँ व्यक्त होती है। कुछ बंदिशें तो पारंपरिक हैं, जिसे उन्होंने अपने ही अंदाज में प्रस्तुत किया, और कुछ रचनाएँ स्वनिर्मित हैं, जिनमें प्रकृति वर्णन, कृष्ण विषयक, अध्यात्म एवं वैराग्य युक्त भाव तथा वियोग शृंगार की बंदिशें हैं। तराना एक लोकप्रिय गायन शैली है, जिसे अमीर खाँ साहब ने ऊँचे शिखर तक पहुँचाया एवं अपनी गायकी द्वारा उसमें सूफ़ीयाना रंग के फारसी शेरों एवं रूबाइयों द्वारा चित्रित किया। एक शोधपूर्ण दृष्टि भी आने तराने पर प्रस्तुत किया। सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य ने उ० अमीर खाँ साहब की बंदिशें समाज एवं श्रोताओं को राग

अभिव्यक्ति का बोध देने के साथ-साथ सकारात्मक सोच एवं जन सामान्य को नादमय अनुभूति प्रदान करती है। संगीत रसिकों एवं विद्यार्थीयों के लिए उनकी गायकी एवं बंदिशें प्रेरणास्त्रोत हैं। भारतीय संस्कृति यद्यपि पूर्ण रूप से श्रेष्ठ तत्वों को ग्रहण करने की प्रवृत्ति रखती है, सभी संस्कृतियों की श्रेष्ठ तत्वों को अपने में सम्मिलित किया है। इसी कारण हमारी संस्कृति चिर नवीन एवं नूतनता लिये हुए है। उ॰ अमीर खाँ साहब ने भी हमारी संस्कृति के गौरव को अपनी रूबाईदार तराना गायकी (जो सूफी अंदाज से परिपूर्ण था), सूफी एवं भक्तिभावपूर्ण रचनाओं में सूर, कबीर, तुलसी, मीरा, रसखान आदि की परंपरा को साकार किया और संगीत के द्वारा हमारी संस्कृति के समन्वित रूप को भूमि प्रदान की। जो कि उनका संगीत जगत् के लिए अविस्मरणीय योगदान है। शोधार्थी ने उनके द्वारा गायी बंदिशों को सुना एवं स्वरलिपि के माध्यम से उनके बाह्य ढ़ाँचा का अवलोकन किया एवं उसमें निहित सौन्दर्यात्मक तत्वों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। अपनी शोध निर्देशिका एवं सह निर्देशिका व अन्य गुणीजनों के सानिध्य में रहते हुए उनके बताए हुए मार्गदर्शन के आलोक में यह एक प्रयास मात्र है।

विषय सूची

1. संगीत कला एवं सौन्दर्य 2. रागदारी संगीत की बंदिशों में निहित सौन्दर्यात्मक तत्त्व 3. उस्ताद अमीर खाँ साहब एवं इंदौर घराना 4. उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा गायी गई पारंपरिक बंदिशों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन 5. उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा गायी गई स्वरचित बंदिशों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन । उपसंहार। साक्षात्कार संदर्भ ग्रंथ सूची।

15. मिश्र (द्वारिका नाथ)

बनारस घराने के सुविख्यात4 संगीतज्ञ पं. बड़े रामदास मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी

<u>Th 25414</u>

सरांश

(असत्यापित)

बनारस घराने की अनूठी मनमोहक संगीत परम्परा के असंख्या मूर्धन्य कलाविदों विश्वप्रसिद्ध कलाकारों की पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही सांगीतिक परम्परा में पं- बडे रामदास मिश्र का नाम एक उच्चकोटि के संगीतज्ञ के साथ-साथ एक उच्चकोटि के वाग्गेयकार के रूप में भी आता है। पं- जी के द्वारा रचित सभी साहित्यिक एवं सांगीतिक रचनाओं को एकत्रित करना इस शोध कार्य का मूल उद्देश्य है ताकि आने वाली संगीत जगत की पीढ़ी को पं- जी की रचनाओं का लाभ मिल सके। प्रथम अध्याय के अंतर्गत बनारस का संक्षिप्त इतिहास एवं विभिन्न घराने पं- बडे रामदास मिश्र का जीवन परिचय प्रस्तुत है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत पं- बडे रामदास मिश्र की रचनाओं का काव्यात्मक विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में पं- जी की रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत पं- बडे रामदास मिश्र की शिष्य प्रशिष्य परम्परा एवं विभिन्न संगीतज्ञों से साक्षात्कार प्रस्तुत है।

विषय सूची

1. बनारस का संक्षिप्त इतिहास एवं विभिन्न घराने – पं. बड़े रामदास मिश्र का जीवन परिचय 2. पं. बड़े रामदास मिश्र की रचनाओं का काव्यात्मक विश्लेषण 3. पं. बड़े रामदास मिश्र की रचनाओं का सांगीतिक अध्ययन 4. पं. बड़े रामदास मिश्र की शिष्य, परिशिष्य परम्परा एवं विभिन्न संगीतज्ञों से साक्षात्कार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

16. रहस्या (रिन्दाना)
1970 ई. से वर्तमान समय तक के कलाकारों द्वारा रचित बंदिशें - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (ख़याल गायन के विशेष संदर्भ में)।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग एवं प्रो. प्रतीक चौधुरी
Th 25416

सरांश
(असत्यापित)

ख़याल गायन शैली में राग विस्तार बंदिश पर आधारित रहता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक पद अर्थात बंदिश का महत्व रहा है। बंदिश के माध्यम से ही हिंदुस्तानी रागदारी संगीत की समृद्ध परंपरा को आगे आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा जा सकता है। रागदारी संगीत की इस श्रेणी में अनेकों कलाकारों के नाम आदर सहित लिए जाते हैं, जिन्होंने बंदिश रचना के क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दिया है जैसे- सदारंग, अदारंग, मनरंग, हररंग इत्यादि। इसके पश्चात भी ऐसे अनेक गुणीजन हुए जिन्होंने अपनी स्वनिर्मित बंदिशों के द्वारा संगीत परम्परा को और वैभवशाली बनाया जैसे- पं. रामाश्रय झा, पं. मणिराम, उ. यूनुस हुसैन खाँ, उ. चाँद खाँ, उ. अज़मत हुसैन खाँ इत्यादि। इसी प्रकार वर्तमान समय में भी ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने अपनी बन्दिशें बनाकर संगीत कला को और समृद्ध किया है एवं आने वाले समय में भी नवीन रचनाओं के द्वारा संगीत को और अधिक सक्षम और समृद्धशाली बनाएंगे। ऐसे ही कुछ कलाकारों (1970 ई. से लेकर अब तक) द्वारा रचित बंदिशों का संकलन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के चार अध्याय हैं। 1970 से लेकर अब तक के जिन कलाकारों की बंदिशों पर कार्य किया गया है उसको दो भागों में बांटा गया है। पहला- दिवंगत कलाकार, दूसरा- वर्तमान कलाकार। इस प्रकार कुल 59 कलाकारों द्वारा रचित बंदिशों का साहित्यिक एवं सांगीतिक विश्लेषण इस शोधप्रबंध में किया गया है।

विषय सूची

1. ख़याल गायन शैली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. ख़याल गायन में बंदिश का स्थान 3. सन् 1970 ई. से वर्तमान समय तक के दिवगंत कलाकारों का जीवन परिचय एवं उनके द्वारा रचित बंदिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन 4. सन् 1970 ई. से वर्तमान तक के जीवित कलाकारों का जीवन परिचय एवं उनके द्वारा रचित बंदिश का विश्लेषणात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

17. राहुल कुमार
राजस्थानर की लंगा जाति के पारम्परिक गीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास एवं डॉ. जगबन्धु प्रसाद
Th 25534

सरांश
(असत्यापित)

राजस्थान के लोक संगीत क्षेत्र में लंगा जाति की संगीत परंपरा उनके गीतों का विश्लेषण एवं विवेचना करने की दृष्टि से प्रस्तुत शोध निबंध के विषय का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध निबंध के अंतर्गत लंगा जाति का परिचय उनके पारंपरिक गीत, लोक वाद्य, गायन शैली, शिक्षण प्रणाली, भविष्य-गत संभावनाऐ तथा राजस्थान के लोक संगीत में लंगा कलाकारों का योगदान पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत राजस्थान की

भौगोलिक स्थिति मानचित्र सामाजिक पृष्ठभूमि संगीत परंपरा एवं संगीत का वर्णन दिया गया है। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत लंगा जाति का उद्भव, इतिहास, संस्कृति, सामाजिक संरचना, सिंधी सिपाही और उनसे जुड़ी जजमानी प्रथा का विस्तार पूर्वक वर्णन तथा लंगा जाति की वर्तमान स्थिति को विस्तार पूर्वक बताया गया है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत लंगा जाति की गायकी, लंगा जाति के पारंपरिक गीतों की विशेषताएं, प्रकार, लंगा जाति की प्रशिक्षण प्रक्रिया, पारंपरिक गीतों के साहित्य तथा पारंपरिक गीतों में 20 प्रकार के गीतों की स्वर लिपियां दी गई। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत लंगा जाति के द्वारा गाए जाने वाले जांगड़ा गीत, जांगड़ा गीत की परिभाषा, जांगड़ा गीत में राग आधारित गीतों के नाम, गीतों में प्रयोग ताले, गाथा गीत, कथा गीत, राग मांड विभेद तथा जांगड़ा गीतों के चार प्रमुख गीतों की स्वर लिपियां दी गई है। पंचम अध्याय के अंतर्गत पारंपरिक वाद्य का वर्गीकरण, जिसके अंतर्गत चतुर्विरध वाद्य वर्गीकरण, लंगा जाति के पारंपरिक वाद्यो का विस्तार पूर्वक वर्णन, तत, अवनद, घन तथा सुषिर वाद्यो का वर्णन दिया गया है। षष्ठम अध्याय के अंतर्गत प्रमुख कलाकारों का साक्षात्कार लिया गया है- कादर खान, असकर खान, मैहरदीन खान तथा आसीन खान लंगा आदि। सप्तम अध्याय के अंतर्गत भविष्य-गत संभावनाओं के विषय पर आधारित है जिसके अंतर्गत शास्त्रीय संगीत प्रसिद्ध कलाकार पंडित विश्व मोहन भट्ट तथा रूपायन संस्थान के संचालक श्री कुलदीप कोठारी जी का साक्षात्कार शामिल है।

विषय सूची

1. राजस्थान की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं संगीत जीवी जातियाँ 2. राजस्थन की संगीत जीवि जाति लंगा का परिचय 3. लंगा जाति की सांगीतिक परम्परा 4. लंगा जाति द्वारा गाए जाने वालू जांगड़ा गीत 5. लंगा जाति के वाद्य 6. लंगा जाति के प्रमुख कलाकारों का साक्षात्कार 7. लंगा जाति की भविष्य-गत संभावनाएँ। उपसंहार। चित्र वीथि। संदर्भ ग्रंथ सूची।

18. रिचा
भारतीय संगीत के क्षत्र में अन्य सह संबंधित विषयों का विवेचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. शालिनी ठाकुर
<u>Th 25406</u>

विषय सूची

1. भारतीय संगीत में सह संबंधित विषय 2. दर्शनशास्त्र एवं संगीत 3. मनोविज्ञान तथा संगीत के शास्त्रीय एवं प्रयोगात्मक पक्ष 4. संगीत के प्रति सामाजिक विचारधाराएँ एवं दृष्टिकोण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

19. LYNGDOH (Budshaphrang)
Comprehensive Study of the Khasi Traditional Songs with Reference to Their Melodic and Rhythmic Aspects.
Supervisor : Dr. Suneera Kasliwal
<u>Th 25421</u>

Not Verified

The study is about the structure of melody and the rhythmic pattern of the Khasi Folk or Traditional Songs. Preservation, sustaining, uplifting, developing, reviving this form of genre are some of the motives behind this research. The study is divided into six chapters. The first chapter is a brief summary about the origin, religion, occupation of the Khasis, the origin of Khasi Folk Music and a

general survey of Folk Music and a study of the meaning of Khasi Folk Music and Folk Songs with their classifications. In the second chapter, a study of the structure of melody of the various Khasi songs, the basic scale and the various notes will be carried out here. A study about these various embellishments and ornaments will also be discussed here. The third chapter deals with the beat and rhythm in which these melodies are being placed and composed. The pattern of rhythm present in these songs and melody depicts the mood and nature of the song. A study about these beats and rhythmic pattern, their use and significance to the Khasi songs will be discussed here. In the fourth chapter a study of two well known composers will be discussed. Their life sketch, contribution and analysis of few of their compositions will be discussed at length in this chapter. The fifth chapter is a description about the various musical instruments will be discussed and their use in the various Khasi Songs and dances. Their significance will also be discussed in this chapter. A brief comparative study too will be dealt in this chapter with regards to the similarities and differences of the other musical instruments of the tribes of north – east India. The six chapter is a study about the influences, contribution and impact of other musical traditions to Khasi music.

Contents

1. Historical Background of the Khasis 2. Khasi music: Its melodic Structure 3. Khasi songs : Their pattern of Rhythm and Beats 4. Composers of Khasi music 5. Musical Instruments 6. Contribution and Influence of other musical traditions towards the Khasi songs. Conclusion. Glossary.

20. विवके कुमार
दिल्ली घराने की गेय विधाएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. जगबन्धु प्रसाद
<u>Th 25409</u>

सरांश
(असत्यापित)

भारतीय संगीत का इतिहास अनेक समृद्ध परम्पराओं से प्रेरित रहा है। यही हमारे संगीत की प्रमुख विशेषता भी है। भारतीय संगीत में घरानों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिन्होंने हमारे पुरातत्व संगीत को वर्तमान तक संजो कर रखा है। भारतीय संगीत में गायन, वादन, नृत्य तीनों कलाओं के विभिन्न घराने है। प्रथम अध्याय का शीर्षक 'घराने की अवधारणा' है। इस अध्याय में घराने की परम्परा, घराने की व्युत्पत्ति, घराने का अर्थ, घरानों की शुद्धता एवं अनुशासन, घरानों का विकासक्रम आदि पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय का शीर्षक है "दिल्ली घराने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि" दिल्ली घराने का कव्वाल बच्चौं से गहरा संबंध रहा है तथा कव्वाल बच्चो का ख़्याल गायकी से भी घनिष्ठ संबंध रहा है। इस अध्याय में इन सभी विषयां े का गहराई से विवरण किया गया है। तृतीय अध्याय का नाम है "दिल्ली घराने की ख़्याल गायकी"। दिल्ली घराने की ख्याल गायकी की अपनी विशेषताएं हैं जैसे-ख्याल के प्रकार, तानों के प्रकार, दिल्ली घराने की ख्याल गायकी के महत्वपूर्ण अंग आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है "दिल्ली घराने में प्रचलित गेय विधाएँ" जैसा हम सभी जानते है दिल्ली घराना मुख्यतः ख़्याल का घराना है परन्तु दिल्ली घराने में ख़्याल के अतिरिक्त ठुमरी, दादरा आदि उपशास्त्रीय विधाएँ तथा गज़ल, सावन गीत, भजन आदि सुगम-संगीत की विधाएँ ँ तथा कौंल, कव्वाली, रंग आदि सूफी संगीत की गायन विधाओं का भी प्रचलन है। इस अध्याय में इन सभी गेय विधाओं का वर्णन दिया गया है। पंचम अध्याय है "वर्तमान संदर्भ में दिल्ली घराना"। दिल्ली घराना वर्तमान समय में उपर्युक्त दी गई अन्य गेय विधाओं के आधार पर नए-नए कार्यक्रम का आयोजन करता है। इससे दिल्ली घराने का स्वरूप भी धीरे-धीरे बदल रहा है। इस अध्याय में इन सभी बातों पर विस्तार से विवरण किया गया है।

विषय सूची

1. घराने की अवधारणा 2. दिल्ली घराने की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 3. दिल्ली घराने की ख्याल गायकी 4. दिल्ली घराने में प्रचलित गेय विधाएं 5. वर्तमान संदर्भ में दिल्ली घराना। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

21. शर्मा (गौरव)
दिल्ली शहर के परम्परागत वाद्य निर्माता एवं उनका योगदान : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
Th 25408

विषय सूची

1. वाद्यों की उत्पत्ति एवं निर्माण सामग्री 2. दिल्ली शहर में तंत्री वाद्य निर्माता एवं उनकी पृष्ठभूमि 3. दिल्ली शहर में अवनद्ध वाद्य निर्माता एवं उनकी पृष्ठभूमि 4. दिल्ली में सुषिर वाद्य निर्माता एवं उनकी पृष्ठभूमि 5. दिल्ली में वाद्य मरम्मत केन्द्र। उपसंहार। चित्र वीथि। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

22. SRUTHI C.L.
Influence of Sanskrit in the South Indian Languages in Carnatic Music Compositions.
Supervisor : Prof. KP. B. Kannkumar
Th 25420

Not Verified

This Topic "The Influence of Sanskrit in the South Indian languages in Carnatic Music Compositions" suggests the impact of Sanskrit in South Indian Languages in the musical composition and the compositions of prominent composers has analysed. Sanskrit words were occupied by and large by the composers while composing. The Influence of the Sanskrit was so much that when composers were composing they were in search of appropriate words, Sanskrit words came in rescue. It is worthwhile to study the Role of Sanskrit in Carnatic Music, Languages and Literature. Chapter 3 discusses about the influence of Sanskrit in Telugu compositions before Trinity period, during Trinity period, Post Trinity Period. Chapter 4 explains the Sanskrit's influence in the compositions of Dasakutas and Wodeyars composers who composed with Kannada being their regional language. To name a few *Sripadaraya, Vyasaraya, Sangeetha Pitahmaha Purandara Dasa, Kanakadasa, Vijaya Dasa and Mysore Maharaja.* Chapter 5 discusses about the Tamil composers who got influenced with the Sanskrit language. The composers of the Tamil language before and after Trinity period and successors found Sanskrit synonyms served as a boon for composing. This can be seen in compositions of various composers like *Seerkazhi Moovar (Muthuthandavar, Marimuthapillai and Arunachala kavi.* Chapter 6 deciphers with the composers who composed in Malayalam. Composers like *Swati Tirunal, Iraiyamman Tampi Kunjukuti Thankachi,* etc had rich influence of Sanskrit words in their compositions. Chapter 7 deals with the contemporary composers who followed the footsteps of their predecessors. To name a few Composer, *Dandapani Deshikar,* etc. The conclusion made for this research states that Sanskrit language is "*Kalpavruksha*", the more it is used the more it paves way to go deeper into it.

Contents

1. Introduction 2. General influence of Sanskrit South Indian languages in musical compositions 3. Sanskrit words found in prominent Telugu composer's Compositions 4. Usage of Sanskrit language in Kannada compositions 5. The influence of Sanskrit on Tamil composers 6. Sanskrit's influence with Malayalam composers 7. Contemporary situation. Conclusion. Appendix. Bibliography.